13.11.2010

माननीय महोदय,

प्रस्तुत पत्र के साथ आचार्य श्री महाश्रमण लिखित लेख ' **स्वस्थ लोकतंत्र के चार आधार** ' विषयक आपको प्रेषित कर निवेदन है कि यह लेख आपके समाचार पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें।

लेख अप्रकाशित है, प्रकाशित अंक की एक प्रति अवश्य भिजवाएँ।

आभार !

आपका

(ललित गर्ग)

संलग्न : उपरोक्तानुसार

स्वस्थ लोकतंत्र के चार आधार

– आचार्य महाश्रमण –

लोकतंत्र प्रशासन की एक सुंदर प्रणाली है। यह प्रणाली प्रायः अहिंसा पर आधारित है। लोकतंत्र में अनेक लोग होते हैं इसलिए कभी वैमत्य भी हो सकता है और एकमत्य भी हो सकता है। किन्तु सरकार में स्थिरता रहनी चाहिए। वैमत्य के कारण अथवा पारस्परिक विद्वेष के कारण सरकार गिर जाती है तो कठिन स्थिति पैदा हो जाती है। पांच वर्षों के लिए एक सरकार सत्ता संभालती है किंतु जब बीच में ही चुनाव की स्थिति बन जाती है तो उसमें न जाने राष्ट्र की कितनी शक्ति खर्च हो जाती है। इस मध्यावधि चुनाव की स्थिति को अच्छा नहीं माना जा सकता। पांच वर्षों तक एक सरकार नहीं चलने का प्रमुख कारण है कि लोकतंत्र में अनेक दल हो जाते हैं और वे स्थिति को खराब कर देते हैं। जहां अनेक दल साथ हों वहां राष्ट्रहित की भावना हो, अनपेक्षित विरोध न करने की भावना हो और अगर विरोध भी हो तो सत्य के लिए, देशहित के लिए हो तो वह विरोध भी लाभदायी बन सकता है। जो विरोध मात्र सत्ता पर आसीन सरकार को गिराने के लिए ही किया जाता है वह विरोध राष्ट्र के लिए अहितकर बन जाता है।

इनदिनों भ्रश्टाचार के मुद्दे पर सरकार में अस्थिरता एवं मलीनता की स्थिति बनी हुई है। मैं कई बार सोचता हूं कि एक पार्टी मजबूत आ जाए तो सरकार निर्विघ्न रूप से चल सकती है। अनेक दल हों और साथ में अनेकांत हो तो कोई कठिनाई वाली बात नहीं लगती। किंतु अनेकांत के अभाव में अनेक दलों का होना लाभदायी नहीं लगता। अनेकांतविहीन अनेक पार्टियों के हो जाने से सरकार की मजबूती में अंतर आ जाता है। लोकतंत्र में गिरावट भी आ सकती है। अनेक दलों की व्यवस्था में जब स्वार्थपूर्ति में खतरा दिखाई देता है तो लगाम खींच ली जाती है और सरकार गिरा दी जाती है। कुछ दलों के आधार पर सरकार का पतन भी हो सकता है और कुछ दलों के आधार पर सरकार बनी भी रह सकती है। जहां इस प्रकार की स्थिति होती है वहां सरकार को जैसे तैसे बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। ऐसी स्थिति राष्ट्र के लिए हितकारी और मंगलकारी नहीं हो सकती।

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अहमदाबाद में प्रवासित आचार्य श्री महाप्रज्ञ के दर्शन किए। वार्तालाप के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा–''अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने धर्म और संप्रदाय की समस्या के

संदर्भ में कहा था कि धर्म को पहले स्थान पर और संप्रदाय को दूसरे स्थान पर रखा जाए। तभी देश का भला हो सकेगा और समस्याओं का समाधान हो सकेगा। वर्तमान संदर्भ में मैं इस बात को इस प्रकार बदलकर कहना चाहता हूं कि राष्ट्र का स्थान पहला हो और दल का स्थान दूसरा हो, तभी देश की समस्याओं का समाधान हो सकेगा।'' यह बात सुनते ही डॉ. कलाम ने अत्यंत भावविभोर होकर बोले–''आचार्यजी! आप संप्रदाय से ऊपर उठे हुए हैं। आपके पास जो भी नेता आए, उन्हें यह बात जरूर बताएं।''

अंग्रेजी में कहा गया है–लोकतंत्र में कर्तव्यपरायणता नहीं होती, अनुशासनबद्धता नहीं होती तो लोकतंत्र का देवता विनाश अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। लोकतंत्र में कर्तव्यपरायणता हो, अनुशासनबद्धता हो और राष्ट्रहित की भावना हो तो लोकतंत्र बहुत अच्छा काम कर सकता है।

लोकतंत्र में प्रशासक जनता ही होती है। जनता के द्वारा निर्वाचित व्यक्ति ही शासन संभालता है। जनता के द्वारा ही जनता का शासन होता है। ऐसी स्थिति में प्रशासन करने वाले व्यक्ति अच्छे आएं, उनका स्तर ऊंचा हो तो देश का भला हो सकता है।

सरकार के लिए दो बातें आवश्यक हैं–स्थिरता और स्वच्छता। गतिशीलता को भी स्थिरता का आधार अपेक्षित होता है। स्थिरताविहीन गतिशीलता हो ही नहीं सकती। यदि गति करना है तो किसी स्थिर तत्व का आलंबन लेना ही होगा। चक्का घूमता है, कील स्थिर रहती हैं कील की स्थिरता चक्के की गति में सहयोगी बन जाती है। आदमी सीढ़ियां चढ़ता है, गति करता है किंतु सीढ़ियां स्थिर रहती हैं इसलिए आदमी ऊपर चढ़ने में सफलता प्राप्त कर लेता है। सरकार में यदि अस्थिरता रहती है तो वह देश के लिए नुकसानदेय बन सकती है और स्थिरता होती है तो वह जनता के विकास में सहयोगी बन जाती है। सरकार में यदि स्थिरता है किंतु अस्वच्छता है तो भी विचारणीय बात हो जाती है। इसलिए स्थिरता भी हो और स्वच्छता भी हो, दोनों तत्वों का समावेश हो तो कुछ हित की बात हो सकती है। जैसे पानी में अस्थिरता हो और मलीनता हो तो पानी के भीतर क्या है, देखा नहीं जा सकता। वैसे ही सरकार में अस्थिरता और अस्वच्छता हो तो देशहित की बहुत आशा नहीं की जा सकती। इसलिए देश के हित के लिए, व्यक्ति के हित के लिए लोकतंत्र स्वच्छ हो, अनेकांत और अहिंसा पर आधारित हो, एक–दूसरे को गिराने का लक्ष्य न हो बल्कि सहयोगपरक दृष्टिकोण हो तो लोकतंत्र देश के लिए वरदायी बन सकता है। हमारा हिन्दुस्तान विकासशील देश से विकसित देशों की श्रेणी में आ सकता है।

नदी के दोनों किनारों पर दो नगर बसे हुए थे। एक नगर की प्रजा बहुत सुखी थी, राज्य का बहुत विस्तार हो रहा था। चारों तरफ उसकी यशोकीर्ति फैल रही थी। दूसरे नगर की प्रजा दुःखी थी, राज्य का विस्तार भी नहीं था और उपद्रव भी फैल रहे थे। पहले नगर के अधिकारी से सुख–संपन्नता का कारण पूछने पर उसने कहा–मेरे पास चार चौकीदार हैं–1. सत्य 2. प्रेम 3. न्याय 4. त्याग। पहला चौकीदार मुझे कभी भी असत्य बोलने नहीं देता जिसके कारण मैं प्रजा का विश्वासपात्र बना हुआ हूं। दूसरा चौकीदार मुझे घृणा और तिरस्कार से बचाता है जिसके कारण मैं सबके साथ प्रेम से बोलता हूं। इसलिए प्रजा मुझे बहुत स्नेह, सत्कार और सहयोग देती है। मेरा तीसरा चौकीदार मुझे अन्याय से दूर रखता है। नीतिपूर्वक कमाई के कारण मेरे राज्य में धन की बहुत वृद्धि हुई है। चौथा चौकीदार मुझे हमेशा स्वार्थ चेतना से ऊपर उठाए रखता है। इसलिए मेरा यश चारों दिशाओं में फैल रहा है।

भारत की जनता में भी सत्य के प्रति आस्था हो, प्रेमपूर्ण व्यवहार हो, न्यायमार्ग पर चलने का साहस हो और त्याग के पथ पर बढ़ने का संकल्प हो तो देश का बहुत विकास हो सकता है।**प्रस्तुति : ललित गर्ग**

प्रेषकः

(ललित गर्ग)
ई–253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई पी एक्सटेंसन, पटपड़गंज
दिल्ली–110092 फोनः–22727486, मोबाईल :– 9811051133